ए ए ए णमो जिणाणं नमो वीतरागाय। विंदीय गुरु आसिद्ध अनंता तीर्थंकर गणधर
सगवंत करी जोडी रषि वंदन करूं। जिम लाभे चारित्र अति रवरूं। १। अनंत चउवी
सी काल अनंता। ए ए ए नमो अरिहंताणं। मांद रु नमस्कार अरिहंत नइ जे अ
रिहंत सगवंता। उर्ध्व अंति रिछाय चउत्रीस। सस्ति त विहरमान प्रगट जइ ते कहीजा
णिवा। श्री वीतराग सुद्ध सदा राग मल स्वेद रहित जइ जइ। प्रथम अतिशय जाणि
वु। १ स्वास सदा इ कमल नी पारे शसुगंध २ शरीर न रुधिर मांस गाय ना दूध
शरीषुं उज्वल जइ शे। ३ आहार निहार लोक नइं अदृष्ट ए चारि अतिशय जा
न्म काल थिकी जाणिवा। जाय ए प्रमाण समवसरण मांहि मनुष्य देवता तिर्य
च नी कोमा कोडि बाधा रहित समाय। १। तीर्थंकर नी वाणी। ए योजनगामिनी आप

आपणी भाषा इ सर्व जीव श्री छइं। २। स्वामी नी इ दिइं तामंडल सूर्य नी पारे
इं फलदल जइ शे। ३। सवा सु जाय ए माहि रोग किसि जन ऊपजइ। ४। वैर इति
ईमारि धा अतिवृष्टि। अना वृष्टि। दुर्भिक्ष। ए चक्र पर चक्र ए सत्य ए आठ इ
स्वादन जइं। ए इग्यार इ अतिशय। दीक्षा ग्रहण थी कर्म क्षय हुंता ए जपजइ।
आकाशि मंडलि। धर्म चक्र। चामर। सिंहासन। त्रय छत्र। इंद्र ध्वज। ए ए
चसाज्य चिक्कि करी। शालइं। सुवर्ण मय नवकमल ऊपरि चरण वइशद्दा
नाद मरूप्य मय शासिता। त्रिणि गढ जइ शे। स्वामी चउमुख धर्म देशना दिइ छे।
श्री सर्वज्ञ ना शरीर थिकी। बार गणा इ उंच न वृद्धि शे। आशोक वृक्ष शालइ। ए ती
र्थंकर देव विहार क्रम करता कांटा ऊंधा थाइ। ए ए ए नमस्कार इं। ११। आकाशि मंड

नु० अ०

तिादवडुंडुत्तिवाजइं।१२। स्वामीविदारकरतांवायसानुकूल्यवाइं१पंछि
समस्तपांषीयाप्रदक्षिणादिइं।१४। मेघमालीदवगंधोदकिवरसइं१५पंच
वर्णांपुष्पपरिमलाढानीवृष्टिकरइं१६ दीक्षालीधयछउंशरीरनानरवके
शवाधइंनही।१७। जघन्यतुदेवताएकाकामिनिरंतरासवाकरइं१८ छइऋ
तुपांचइंइंद्रीनाविषयरूडाजिजइ१९। एउंगणीसअतिशयदेवतानाकी
धजाणिवासमस्ततीर्थंकरनइंएवंकारइ२४ अतिशयविराजमानजइं।
निश्चयअतिशयसहितपांत्रीसवचनातिशयपरिकलितअढारादोषअदूषित
तअढारदोषकेहादानांतरायलाभांतरायभोगांतराय
यधावीर्यांतरायपहासुहरतिअरतिभयशुगजुगुप्सा११कामरमिथ्ा २

वरिअज्ञा१४निद्रा१५। अविरतिरहरागा१७द्वेषा१८दोषातरहितअष्टमहा
प्रातिहार्यसहितकिसियांतप्रातिहार्यबारगुणुअन्नाकहइं।१ सुमनोवृष्टि
श्रआकाशिदवडुंडुत्तिविजदिशाअणवाईवाजइं।२।चवीसाजाडांचामरढ
लइंधासुवर्णमयसिंहासनपापुष्पवृष्टि।१२।आदित्यथिकीअधिकातजिकरी
नामंडलऊलहलशहामस्तकऊपरिदवकीत्तरवाजइं३ऊपराऊपरित्रि
सिरछत्रएवंकारइबारवन्नधराइंजाएइसियांतअष्टमहाप्रातिहार्यत्रिसिग
ढपरिखुगढरत्नमयमसिमयाकोसीसां।बीजुसुवर्णमयगढरत्नमयकोसीसांची
जुगढरूपानुसुवर्णमयाकोसीसां।सुवर्णमयरूपीवबांधिजांऊधबीरपंचवर्ण
फूलपगरबारइपरषदबूराइबारइपरषदकहिवा[illegible]तकिसीपदि

Digitized with financial assistance from the Government of Maharashtra on 11 June, 2017

ती[illegible]प[illegible]रषदसाधुवेमानिकादवीसाधीएत्रिणिपरिषदअत्रियकृणिज्यो
[illegible]तिषीस्तवनपतिव्यंतरएत्रसिनीदवीनेरतकृणिज्योतिषीस्तवनयति।
व्यंतरएत्रिहिदवतावाविकृणिविमानिकदवतामनुष्यनाथपुरुषमनुष्यस्त्रीए
त्रिहिईशानकृणिरुइअसीसहिसपावडीआरसहितहपासित्रसिरथोलि
एवंकारइंवारणालिअपूर्वातारणाझलकइंतसिंहासनमारुहिविधुवनलक्ष्मीसहितअंतरंगवइरीरहितविश्वाधीशापरमजगदीशासुवर्णमयक
मलिबइठासमस्तजीवराशिइंदीगायाजनदारिणीवाणीसर्वभाषानुसारिणी।
अनंतदुःखनिवारिणीसकलसोख्यकारिणीइसीवाणीइंचिडंमुखविडघ्रं
कारिधार्मापदेशदेताकेवलज्ञानधरतात्रोदराजनामस्तकऊपरिबंचितालीसलाष ३

जोयणप्रमाणमुक्तिशिलाऊपरितिहांपुजताअनंतबलाअनंतगुणाअनंतज्ञा
नाथपुरुषमादिउत्तमात्तमाजजिननानामतेनामारिहंताजत्रिभुवनमादिश्रीवीत
रागनामूर्तितेस्थापनारिहंतकहीइजीश्रीश्रेणिकादिमहापुरुषतीर्थंकरपदवी
याग्यजीवतेहवारिहंतकहीइजेविहरमानपरमेश्वरश्रीसीमंधरस्वामिप्रमु
खवतीर्थंकरातेस्थावारिहंतकहीइएहवाजअरिहंतअनंतानंतज्ञायाअनइजंसि
इंवलीजइबइंतहनूध्यानपंचवर्णअछदलकमलरूपध्याईइंतेपरिसांतनु
नासिकमलितिहांकमलनुनालतिहांकंठहृदयामिनाभिसूपादशिविकाश्यपामिंब
अरिहंतास्थतवर्णजिसिउसुक्लफलनुदाखजिसिउवैताढ्यपर्वतजिसिउपूर्णि
मानुचंद्रमाजिसिउक्षीरसमुद्रनुफीणाजिसिउस्फटिकरत्नजिसीसिहिशिलानिर्मलि

जिण श्वेतातपत्रछत्र जिसिउ ऐरावणगजेंद्र जिसिउ देवदूष्यवस्त्र। जिसिउ ण
दक्षिणावर्तशंख। जिसिउ कामधनु दूहधतिसिया परमश्वर निर्मलदृष्टा अष्ट क
र्म अद्भावनसु प्रकृतिरहित इसिया उज्ज्वल जिउ जगनाथ आकाशनी परिनिरालं
बु पृथ्वीनी परिइं सर्वंसहामरुनी परिइं निश्कंप समुद्रनी परिइं गंभीर चंद्रमानी प
रिइ सोम्या सूर्यनी परिइं तपतेजा मेरुनी परिइं अक्षोभ्या बाधनाचंदननी परि
इं सीतलवायनी परिइं अप्रतिबद्धा हारंडपंक्षीनी परिइं अप्रमत्त जगत्रयवेद
नीकमहामुनीश्वर नइं ध्यायवा योग्य केवलज्ञानिश्करी त्रिभुवनदिनकर इ
सिया श्रीवीतराग रहइ नामा अरिहंताणं इणइं पदि माहरु नमस्कारु ॥१॥ नमो
सिद्धाणं। माहरु नमस्कार सिद्ध रहइजं। जे सिद्ध सिद्धं तिपनार सदि बोलीइ तेहा

सेदा तीर्थंकर सिद्ध १ अतीर्थंकर सिद्ध पुंडरीक गणधरादि २ तीर्थसिद्धा अने किंगण
धरा ३ अतीर्थसिद्ध माता मरुदेवा ४ गृहस्वलिंग सिद्ध तरातश्वरादि ५ अन्यलिंग सि
द्ध वकलवारीद्दा ६ स्वलिंग सिद्ध अनेकि साधु ७ स्त्रीलिंग सिद्धा चंदनबाला ८ पुरुष
लिंग सिद्ध अनंताणं ९ नपुंसकलिंग सिद्ध गांगेय १० प्रत्यक बुद्धसिद्ध करकंडु ११
स्वयंबुद्ध सिद्धा १२ बुद्धबोधित सिद्धा १३ एक सिद्ध १४ अनेकि सिद्धा १५ जिहांएक
सिद्ध तिहां अनंता सिद्ध रहइ अशरीर रहिता संपूर्णज्ञानदर्शनचारित्र धरता केवल
ज्ञानिश्करी सर्वजीवनालदृजाणता अनंत गुणा अनंत बल अनंत वीर्यसहित जन्म
जरामरण रोग शोग वियोग आधिव्याधि प्रमुख सकल दुःखथकिकामूकाणा। इंद्र
उपेंद्र सर्वदेवतानां सुखचक्रवर्त्ति आदि मनुष्यनां सुखातणकत्रकीजइं तपिंड अनंत

गुणकी जइ उदइ एकसिद्धनइं अनंतमइ लागिइं नावइ एहवा सिद्धनां सुख आ
का शनमाइ सिद्ध दृष्टांत कहुइ दृष्टांत। चक्रवर्ति जनइं पारिसमय रघतिइ अनंता
अनंत सुख लागवता। जासिद्ध रक्त कांति धरता। जिसिउ ऊगउ सूर्य जिसिउ
द्रोगलानुवर्णी जिसिउ दाडिम जासूनफूल। जिसिउ अर्ध गुंजा रंग। जिसिउ
निषध पर्वत। जिसिउ रक्तात्पल कमल। जिसिउ मरकत रत्न। जिसिउ त्वालन्तु रंग।।
जिसिउ ढंकानुराला। जिसिउ चूना सहित तंबोला इसिया रक्त वर्ण सिद्धनी पांषडी
ध्याईइ। संस्थान संघयण वर्ण गंध रस स्पर्श जिसि इ दृष्टइं नथी। पंचतालीस लाख
जोयण प्रमाण मुक्ति शिला ऊपरि जोअणइं चुवीस मइ लागि अवस्थान कर
ता शरीर रहित केवल तेजपुंजाकार त्रैलोक्यनुं सार एहवा श्री सिद्ध दृष्टइं। नमो सिद्धाणं ५

एणइं पदिइं माहरुं नमस्कार हउ। नमो आयरियाणं। माहरुं नमस्कार श्री आचार्य
रहइं हुंज आचार्य ज्ञानाचार। दर्शनाचार। चारित्राचार। तपाचार। वीर्याचार एवं पंच।
विध आचार प्रतिपालइं। रागद्वेष अंगथिकं टालइं। सकल सिद्धांत अर्थ जाणइ।।
स्वजीव प्रतिबोधी मारगि आणइ। दंतरहित बत्रीस गुणा सहित। तगुणाकरी यो
चइं इंद्री संवरइ। नवब्रह्मचर्य नीवाडि माहि वसइं। क्रोध मान माया लोभ एचारिकषा
य परिहरइं। सर्व प्राणातिपात। सर्वमृषावाद विरमण। व्रत सर्व अदत्तादान विरमण
सर्व मैथुन विरमण। सर्व परिग्रह परिमाण विरमण। एपांचमहाव्रत धरइ। ईर्यासि
मिति। भाषासमिति। एषणासमिति। आदाननिक्षपणासमिति। पारिष्ठापनिका
समिति। मनागुप्ति। वचनगुप्ति। कायगुप्ति। एअष्ट प्रवचनमाता प्रतिपालइं।

एवत्रीसगुणधरइं श्रुतदृश्यरूपकाज्ञानक्रियासंयमनाआधरा श्रीजिनशासन
साधरा सकलविद्यानिधानाचुगप्रधानगुणगणरत्नाकरमहिमामहादधि।
अतिशयसमुद्रमहागीतार्थज्ञानपरमार्थी श्रीसूरिमंत्रस्मरणकरणतत्परश्री।
सूखिरतदनुवणीजिसिउतापविनसुक्सीजिसिउदरिद्रानुरंगाजिसिउआज
तिनूफूलजिसिउदरीयालनुवांनाजिसिउपरिपक्कसहकारफलाजिसिउशिख
रीपर्वताजिसिउपीतवर्णरत्नातिसियाश्रीआचार्यपीलीकांतिधरता ॥ श्री ॥
नामाअयरीयाणं॥इणइंपदिश्रीआचार्यनइंमाहरुनमस्कारजा॥इम॥नमो
उवज्झायाणं॥माहरुनमस्कारश्रीउपाध्यायरहइजा उपाध्यायद्वादशांगीसि
द्धांतनाइंतेकिसियांद्वादशांगाश्रीआचारांगश्रीसूगडांगरश्रीठाणांगउ श्रीसम ६

वायांगधाश्रीविवाहपन्नत्तिपाश्रीज्ञाताधर्मकथांगहाश्रीउपासगदशांगछा
श्रीअंतगडदशांगजाश्रीअनुत्तरोपपातिकदशांगएश्रीप्रश्नव्याकरणांगएण
श्रीविपाकश्रुतांगइएए अग्यारअंगातद्याराजप्रश्नीयउपांग१जीवाभिगमर
पन्नवणा२सूरपन्नवणा३ जंबूद्वीपपन्नतिपचंदपन्नतिदसूर्यपन्नतिछद्वीप
सागरपन्नतिजनपपातिकए कल्पवतंसिका१०पुष्पिका११पुष्पचूलिका१२एबा
रउपांगा छेदसूत्रपहिलुंसूत्रनिशाइजुंअंबाडीसहितदशाश्रुतस्कंधजवडुबसि
उरडकीजइ तत्तलइंघालिउत्पादइसिनामिपहिलुंपूर्वलिखाइं१बीजुंअथा
यणीपूर्वतिलिखाइजुंएहवारहाधीयाप्रमाणमासिरात्रीजुंवीर्यप्रवादपूर्वतिलिखाइ
जुंचियारिहाधीया२चउथउंअस्तिप्रवादपूर्वतिलिखाइजुंआठहाधीयाप्रमाणथ

पंचमुंज्ञानवादपूर्वतिखाइसालदाघीए५छहुंसत्यप्रवादपूर्वउतिखाइ
इुवत्रीसदाघीया६णहासातमुंआत्मप्रवादपूर्वदधदाघीए।आठमुकर्मपूर्व
दउतिखाइ।एकसुअठावीसदाघीया८।नुमूप्रत्याख्यानपूर्वलाबितांबिसर
बप्पनदाघीया९।दसमुंविद्याप्रवादपूर्वतिदांपांचसिइंबारासत्तरदाघीया
१०।अग्यारमूकल्याणनामाध्यपूर्वउतिखाइ।एकसदअनइछुवीसदा
घीया११।बारमुंप्राणावायपूर्वइंबिसदअवितालीसदाघीया१२।तेरमूक्रि
याविशालपूर्वितियारिसदसत्तछनुंदाघीया१३।चोदमुंलोकबिंदुसारपूर्वति
षतां।आवसदअएकसुबांणुंदाघीया।जवऊमसिउरडकीजइउतिखाइए
चोदपूर्वधरतद्याऊरानुबंधा।आउरप्रत्याख्यानमरणविधि।तंडुलवियाली ७

यो।दाचंदस्तवाचंदाविषयो।वीरस्तव।देवेंद्रस्तवगणिविद्यागछाचारए।दस
पइन्नाबंछदग्रंथाछियारिमूलग्रंथ।अनुयागद्वार।नंदिसूत्रए।इादशांगीसि
द्धांतसिष्परहइंत्तणावइं।अनइंआपणापइसुणइंजगुणाकरीआचार्यप
दायाएनिर्विकारविद्यानासत्रकारसोताकारश्रीउपाध्यायजिसिउंसाविजय
जिसिउनीलपर्वत।जिसिउवसंतमासिवनषंडजिएआवाकहरू।जिसिउनीलो
त्पलकमल।जिसिउनीलानगीनानुवसीजिसिउमघघूवइंमहिनीनविअंऊरेना
लवसीतिसियाश्रीउपाध्यायनीलीकांतिकरीदीठिवंतजंता नमोउवझायाणं
ईणइपदिइश्रीउपाध्यायरहइमादरुनमस्कारऊध।नमोलाएसव्वसाहूणं।
लोकमांहिसर्वसाधुरहइंनमस्कारऊ।जसाधुसालादाषउदगमनासालदोष

उत्पादनादोसए षणादोष एवं बत्तालीसदोषविशुद्ध आहारलिइं समस्तइंद्रि
यदमश संसारिइन्द्रमइं बावीसपरीसहसहिइ नवकल्पिविहरता रहइजे
साधुसंसारछिका ऊपरागचालइ इंगालंतासमजीवरहइं मुक्तिसोख्यदेता
मात्रिआपइं जेमुनीश्वरतणासत्तावीसगुणधरइंतकहा व्रतषटकधरइंपांच
इंद्रीनियहइंसावसत्यारकरणसत्यारइक्षमाधानिलोभता १५ त्याघात
क्रियाकरण १६ मनवचनकायनिराधण कषायषटरध संयमयोग
युक्त २५ शीतादिवेदनासहना २६ मरणांतउपसर्गसहइ २७ए साधुसत्ता
वीसगुणयुक्तऊश एहवाशांतदांतकांतविरागनासमुद्रासाहसीकसिरामणि
गुणवंतमाहिमूलगा सज्जनसदाप्रसन्नजीवलोकनाबोधवाऊगतिरूपीयास ८

समुद्रनासासणदारा कईकवलधरा केणविपुलमतिऋजुमतिश्रुतधरहीरा
श्रवमधाश्रवसंभिन्नश्रोताकाष्टगतचारणश्रमणविक्रियपदानुसारिणीआसा
विषआकाशगामिनीबरूरूपिणीअक्षीणमहानसीलबधिआदिअठावीसलबि
धनाधरहारामादमायास्नदनाघातिबंधषंडियामदांतउत्तमसत्पुरुषनांचित्त आ
पणइआचारिकरीहर्षऊपजावइपंचप्रकारिविषयशब्द रूपरसगंधस्प
र्शपासलकषायनवनोकषायए २५ कषाय अनेकिघरबारऊकुटुंबपरिवार
दर्पविषवादाजाणमुनीश्वरसर्वपरिहरिजोसर्वसंगपरित्यागकरीएकमोक्षमार्ग
साधइ बिजंपकारयनिधर्मश्रावकधर्मबालइंत्रिसिरत्नज्ञानदर्शनचारित्रधरइ
धविकथाराजकथादेशकथाभक्तकथास्त्रीकथाबांडइपांचनिद्रापढिलीनिद्रा

नु० अर्थ

बीजानिद्रा २ त्रीजी प्रचला ३ चुथी प्रचलाप्रचला ४ पांचमी थीणथी ए निद्रा ५ ल
इं ५ समिति पमदा व्रत पंच प्रकारि सज्झाय वाचना १ प्रछना २ परावर्त्तना ३ अनु
प्रेक्षा ४ धर्मकथा ५ ए सज्झाय पांच ज्ञान मतिज्ञान १ श्रुतज्ञान २ अवधिज्ञान ३
मनःपर्यवज्ञान ४ केवलज्ञान ५ ए ज्ञाना पंच प्रमाण ए ध्याता पंचमगति न इ
ज्ञ कवियाज ता आनकिंदव मनुष्यतिर्यंचना की धान उपसर्ग सहइ ब्रह्मबाह्यब
अभितर ए बार तप करइ क्रमानात्तेउरी धर्मना दिगछुणि करी पवित्र गात्रमू
क्ष्मबादर सर्वजीव नीरक्षा करइ आर्त्तरौद्रध्यान दूरि छांडइ धर्मध्यान शुक्लध्यान ध
रता सर्वसदृसमदृ ण मणिलोष्ट कांचना वासीचंदनकल्प समान समरा ज्ञ
मित्रापरब्रह्मस्वरूपलावता कृष्णकांतिधरता जिसिज्झरिष्टरत्ना ज्ञिसिज्झ्यामवर्ण ए

प्रमाण दंडिसमान पांबहुत्रे नामकर्म तहना ण ३ लाख वीसकोडाकोडि
सागर प्रमाण चित्र कसरीखुं हसातमुं गात्रकर्म बिलाख वीसाकोडाकोडि
सागर प्रमाण ऊंचकार सरीखुं ७ आठमुं अंतरायकर्म त्रीसकोडाकोडि सा
गर स्थिति तहना पांचलाख चंडारी सरीखुं जाणिवु ८ ए आठइकर्म स्थिबहु र
निधत्त २ निकाचित ३ घातकर्मनी प्रकृति केवली एक बंधि १ उदयि २ उदीरणा ३
सत्ता ४ ए चिऊं प्रकारि अघातई ण इ प्रकार एकसु अघावनप्रकृतिना बंध सबल
तपापजीवनिइं पातइ बइतसघलाइ पापनुफडणहार बइ ए पदजिमणा को
नयाबलि कोट विविधपांषडीनालीकांतिधरइ वलीपंचपरमेष्टिकिंसिज वर्त्तइ मंग
लाणंच सवसिं पढमंहवइ मंगलं सर्वमंगलीकमाहि ए प्रथममांगलिकछइ ति।

PAGE(S) MISSING
NOT AVAILABLE

PAGE NO.
10

नु० अ०

मांगलिकघणुं इं बोलाइं दधिदूर्वा सिद्धार्थ अक्षत विवाद ऊछव पगरणा बिं
बप्रतिष्ठा घरमादा साधुसाधर्मिक वाछल्य संघवी पद एहवा मांगलिक पाहि
श्री नुकार उच्चरुं मांगलिक ऊभा एपांषडी डावा कोनपाछलि नीलीरातीकांतिध
रताध्यानधरुं जिमपर्वतमाहि मेरुपर्वत जिमगजेंद्रमाहिसुरजातीयो जिम
समुद्रमाहिस्वयंभूरमणसमुद्र जिमदेवमाहिश्रीवीतरागदेव जिमग्रहगणा
माहिचंद्रमा जिमसिरिवरमाहिमोनसिरिवरा जिमसर्वअस्त्ररणामाहिमु ग
टप्रधान जिमज्ञानक्रियातीर्थमाहिश्रीसिद्धक्षेत्र जिमहरिहंमाहिकल्पहरु जि
म ऊसुममाहिचंपक जिमस्त्रीमाहिरंभा जिमवाजित्रमाहिरंभा जिम पर्वमाहि
श्रीपर्युषणपर्व जिमव्रतमाहिसीलव्रत जिमरसमाहिअमृत तिममंत्रमाहिश्री

११

नुकार राजाधिराज जेह नइं प्रभाविज्या किनी डाकिनीभूतप्रेतपिशाच झो
टीग गोगा व्यंतर यक्षराक्षससीदव्याघ्रअष्टापद सर्पमुखस्तंभनुफरणा
दार अग्निनागऊरना वइरीना इहलोकनाभय परलोकिनरकनानिगोदना
तिर्यंचनांदुखदोहगजाति दीनऊल दारिद्रदोर्भाग्य सर्वरोगनुशमावणहार
समस्तवांछितराजरिद्धित्यागसंयोगपरिवार धनधान्यनीप्राप्ति जेह श्रीनुकार म
महामंत्रथकीजइ जेवांछीइतपामीइ एपाषडी कालीरातीकांतिधरतादीपइ जी
णइंश्रीनुकारिनवपद आवसंपदा अवसवि अक्षरप्रमाण तेह माहिमानअक्षर

रकार २

सारि अक्षरहलूया जाणिवा इसिउ श्रीपंचपरमेष्टिमहामंत्रमाहि आका
रागामिनाविद्यासुवर्णसिद्धि रूपासिद्धिरसिद्धिइसिउ अष्टदलकमलमन

Digitized with financial assistance from the Government of Maharashtra on 11 June, 2017

नुकार

वचनकाया सदि ता। त्ता विइं ए क नुकार गुणिइ। लारव नुकार गुणिया नू फल
पामीइ। इसिउ श्री पंचपरमिष्टि महामंत्र नुकार जजी वस्म रइ ध्याइं चीतवइ।
सदिव निरंतर आराधइं। तजीव संसार माहिइ न्नमइं अनइ वांछित फल पा
मइं इति श्री नवकार नुबाला विबोधः समाइ। सं० १६७५ वर्षमाहा वदि ८ गुरु